International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(2): 46-47

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(2): 46-47
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-01-2016
Accepted: 17-02-2016

ज्वाला प्रसाद
सहायक कुलसचिव
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली–110007

Correspondence
ज्वाला प्रसाद
सहायक कुलसचिव
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली–110007

आधुनिक समाज का प्रतिबिम्ब : अनुभववीथि

ज्वाला प्रसाद

भूमिका

यह ग्रन्थ अनुभववीथि संस्कृत भारती, नई दिल्ली से 2013 ई. में प्रकाशित हुआ। 32 पृष्ठात्मक यह ग्रन्थ आठ वीथियों में विभक्त है। 'अनुभववीथि' राधावल्लभ त्रिपाठी की अनुभूतियों का संकलन है। आठ अनुभूतियों में अनुभवकर्ता लेखक ने विभिन्न तथ्यों का उल्लेख किया है। इसमें संकलित लेखों में कथा, संस्मरण, यात्रावृत्त, निबन्ध, ललितनिबन्ध इत्यादि अनेक प्रकार की साहित्यिक विधाओं का मिश्रण है।

प्रथम वीथि में कवि ने दिल्ली रेलवे स्टेशन के स्वाभाविक दृश्यों का चित्रण किया है । बाहर निकलने पर अपने स्वार्थ के लिए अनेक महापुरुषों के नामों पर संस्थाएँ बनाकर स्वार्थपूर्ति करने वालों का चित्रण किया है। द्वितीय वीथि में मार्गों के नामकरण पर व्यंग्य किया है। तृतीय वीथि में मन्दिरों में होने वाली पण्डा क्रियाओं पर व्यंग्य है। चतुर्थ वीथि में बाज़ार का दृश्य दर्शाया गया है। पंचम वीथि में शवयात्रा और मृतक का शोक मनाने एकत्रित हुए स्वार्थी संबन्धियों के स्वार्थ पर व्यंग्य है। षष्ठ वीथि में धार्मिक बाबाओं और प्रवचनकर्त्ताओं पर व्यंग्य है। सप्तम वीथि में लाल फीताशाही के काम करने के दीर्घसूत्रीय ढंग पर करारा प्रहार किया है तथा अन्तिम अर्थात् अष्टम वीथि में वरयात्रा (बारात) का सजीव चित्रण किया है।

विभिन्न स्थलों और विभिन्न अवस्थाओं में प्राप्त लेखक की इन अनुभूतियों का साहित्यिक महत्त्व तो है ही वर्तमान परिवेश में मानव की मनोदशा, ढोंग, कदाचार तथा असहिष्णुता की झलक भी इनसे प्राप्त होती है।

इन वीथियों में लेखक की अनुभूतियाँ कहीं ऊपरी धरातल पर दृष्टिगत होती हैं तो कहीं अतिगम्भीर समस्याओं की ओर सोचने को भी बाध्य करती हैं। इन अनुभूतियों में प्रसंग के अनुसार स्वाभाविक भाषा का प्रयोग राधावल्लभ त्रिपाठी की विशेषता है।

लेखक ने इन वीथियों में स्थित घटनाओं को राधावल्लभ नामक पुरुष का आत्मवृत्त या आत्मकथा स्वीकारने का निषेध करते हुए ''अहं'' पद द्वारा कल्पित किसी पात्र का विचार करना चाहिए ऐसा सुझाव दिया है जो कि उचित ही प्रतीत होता है क्योंकि राधावल्लभ (लेखक) द्वारा किए गए ऐसे अनुभवों का सम्मिश्रण यहाँ विद्यमान है जो कि भारतवर्ष का सामान्य व्यक्ति भी इन घटनाओं एवं परिस्थितियों से गुजरता है।

मांसाहारियों एवं गांधीवादियों पर व्यंग्य

अहिंसापरायण गांधी जी के मार्ग पर चलने वाले कथित गांधीवादियों पर व्यंग्य– मांसाहारिषु गान्धिवादिष्वपि सन्ति त्रिविधाः श्रेणयः, केचन केवलं कुक्कुटमांसे एव दत्तरुचयः, केचन गोमांसवर्जं सर्वं खादन्ति, अपरे गोमांसमपि खादन्त्येव। [1]

मार्गों के नाम पर व्यंग्य

लेखक द्वारा रिक्शाचालक को चलने के लिए कहने पर रिक्शाचालक द्वारा कथन– 'धर्ममार्गस्तु परिहर्तव्यः, तेन गमने तत्रैव शरीरं क्षपिनं स्याद्, किमपि न लभ्यते। न्यायमार्गेण यदि गच्छति तर्हि महान् विलम्बः। नीतिमार्गस्य तु कथापि विस्मतर्व्या । पार्श्वे चाणक्यमार्गः वर्तते, स समीचीनः स्यात्। [2]

मन्दिरों पर व्यंग्य

लेखक को लगता है कि मन्दिरों में ईश्वर नहीं हैं अतः इस पर व्यंग्य करते हुए कहता है– शान्तमिदं देवमन्दिरम्। ईश्वरः क्वचित् स्यात्। अथवा पुरा ईश्वरोऽत्रासीत्, सम्प्रति तु एतन्मन्दिरं विहाय अन्यत्र गतः। [3]

तीर्थस्थलों पर चुटकी

लेखक जगन्नाथ मंदिर से बाहर निकलकर जब स्वर्गद्वारी सागरतट में स्वर्गद्वारी का दर्शन करता है तब स्वर्गद्वारी के निकट स्थित गन्दगी को देख चुटकी लिए बिना नहीं रह पाता– स्वर्गद्वारं परितः सर्वं स्थलं मलमूत्रकच्चरादिभिः मलिनम्। [4]

महिलाओं के स्वभाव पर व्यंग्य

गृहिणी द्वारा अपने गृह की साजसज्जा हेतु अधिक सामानों को खरीदने के स्वभाव पर लेखक ने बड़ी अच्छी चुटकी ली है– इमाः महिलाः समग्रमेव देहलीहट्टं क्रीत्वा स्वेषु स्वेषु अंकेषु च धृत्वा नेष्यन्तीति प्रतीयते। [5]

ईश्वर पर व्यंग्य

बाजार जाते हुए लेखक ईश्वर का नाम लेना नहीं चाहता है फिर भी ईश्वर को उसके मुख से अपना नाम निकलवाए बिना उसे शान्ति नहीं मिलती– नाहम् ईश्वरे जातु आस्थाशीलः। भजने कीर्तने च न सम्मिलामि। तथापि ईश्वरस्य तु तृप्तिर्न भवति यावत् स मम मुखात् स्वकीयं नाम न निस्सारयेद्, अतः तेन स्वीयं नाम मम मुखान्निस्सारितमेव। [6]

पुजारियों पर व्यंग्य

शवयात्रा के अवसर पर ब्राह्मणों द्वारा मात्र दो मन्त्रों से संस्कार करना उनमें भी उनके द्वारा भ्रष्ट उच्चारण लेखक को उनके ऊपर व्यंग्य किए बिना रहने नहीं देता–द्वाभ्यां श्लोकाभ्यामेव पुरोहितैः सर्वा अन्त्येष्टि पूरिता बालगोविन्दरूप। [7]

मृत्यु पर व्यंग्य

जीजा के द्वारा साला को झगड़ा आदि में मरवाकर स्वयं उसमें रोने पर लेखक एक पात्र के मुँह से यह सत्य उगलवाता है कि बाद में, रोने वाला जीजा उसी के जमीन हड़पने के लिए प्रयास करेगा– अयमावुत्तः अनेनैव कलहः कृतः, तेनैव बालगोविन्दस्य हृदयरुक् सञ्जाता। अधुनाऽयं विलपति। इतो गत्वा बालगोविन्दस्य भवनं भूमिं च प्राप्तुं भूयोऽपि सन्नह्येत्। [8]

प्रवचनकर्त्ताओं पर व्यंग्य

प्रवचनकर्त्ता किस प्रकार लोगों के मनोरंजन के साथ–साथ किस प्रकार अपनी झोली भरने का काम करते हैं समाज को गलत दिशा में भी ले जाने का काम करते हैं इस पर लेखक का व्यंग्य दर्शनीय है– रामलालस्तु दुराधर्षः। स शोभनं गायति। चलचित्रागीतानां स्वरलिपिं विनियुज्य कीर्तनं साधु कारयति। गायं गायम् उत्थाय दशवारं नृत्यति। नर्तनकाले वस्त्राणि तस्य शरीरात् स्खलन्ति। प्रषस्तं वक्षस्तस्य दृश्यते। अपूर्वं स्थास्थ्यम्। मुग्ध महिला पश्यन्ति। तेन समधिकतरं भक्तिभावमहासागरे ता निमज्जन्ति। [9]

विवाह अवसर पर व्यंग्य

विवाह के समय छोटे–छोटे बालकों को विद्युत् यन्त्र उठाकर झुकते हुए चलते देखकर एवं विवाह के अवसर पर डी.जे. की कर्कश ध्वनि पर युवक–युवतियों को फूहड़ नृत्य करते देखकर यह शोभायात्रा लेखक को अशोभायात्रा के समान ही लगती है– इयं शोभायात्रा अशोभायात्रेव प्रतीयते। [10]

सरल भाषा का निदर्शन

कई वर्षों बाद लेखक जब दिल्ली आया है तो उसे दिल्ली के बाजार कुछ नवीन एवं आश्चर्यजनक प्रतीत होते हैं– हट्टोऽयं पुरा अत्र नासीत्। अथवा यस्मिन् काले देहल्याम् अयं हट्टो नासीत् तस्मिन् काले अहं देहलीमागतः स्याम्। ततः परम् अस्मिन् काले ममागमनमिह सञ्जातं, यस्मिन् दिक्काले अयं हट्टोऽत्रशोभते। [11]

अनुभववीथि की रचना शैली

राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा विरचित यह रचना कथा, संस्मरण, यात्रावृत्त निबन्ध एवं ललितनिबन्धों का सम्मेलन है। इसमें इनके सम्मिश्रण से एक नवीन प्रकार की रचना तथा भाषा बन गई है। इन रचनाओं में माधुर्य एवं व्यंग्यपूर्ण वचनों तथा अल्पसमासयुक्त पदावली का प्रयोग देखते ही पाठक को कालिदास एवं वाल्मीकि का स्मरण सहज ही हो उठता है।

लेखक का उद्देश्य व्यंग्यपूर्ण रचना से समाज में विद्यमान अन्धविश्वास, आडम्बर एवं कुरीतियों को विद्वत् समाज के समक्ष प्रस्तुत करना है जिसके द्वारा इन बुराइयों को दूर करने हेतु समाज में जागृति आ सके। फलस्वरूप व्यंग्यात्मक शैली का निदर्शन, साथ ही साथ अनुप्रास अलंकार के मनोहारी दर्शन यहाँ पाठक को सहसा आकर्षित करने में सक्षम है। कुछ प्रसंग–

दर्शनशास्त्र समावेश

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उतरने पर कवि की शैली–

प्रथमं तु पञ्चकर्मेन्द्रियैः पञ्चज्ञानेन्द्रियैः मनोबुद्धयहङ्कारचित्तैश्च संहितो मम कायः यत्र विश्राम्येत् तादृशं स्थानमन्वेष्टव्यम्। [12]

श्रीमद्भागवत् गीता का संकेत

प्रतीक्षालय को लोगों के भीड़भाड़ से भरपूर देखने पर सभी को कर्ममार्गी जैसा मानते हुए कवि हृदय–

प्रतीक्षालयः जनसम्मर्दसङ्कुलः। सर्वे स्वे–स्वे कर्मण्यभिरताः संसिद्धिं लभमानः दृश्यन्ते। न कोऽपि किमपि कमपि वा प्रतीक्षते। प्रतीक्षालयोऽयमप्रतीक्षालयः प्रतीयते। [13]

निष्कर्षतः लेखक ने विविध अनुभवों को अंकित करते हुए समाज में विद्यमान बाह्य–आडम्बरों, बुराइयों एवं कुरीतियों को व्यंग्य के माध्यम से पाठक सम्मुख प्रस्तुत कर इन बुराइयों के समाधान हेतु ध्यानाकर्षण करने का प्रयास किया है। यह नूतन प्रयोग लेखक की प्रतिष्ठा रूपी वृक्ष में सुगन्धित पुष्प के समान है जो कि समाज के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पाद टिप्पणी

1. अनुभववीथि (प्रथम वीथि)
2. अनुभववीथि (द्वितीय वीथि)
3. अनुभववीथि (तृतीय वीथि)
4. अनुभववीथि (तृतीय वीथि)
5. अनुभववीथि (चतुर्थ वीथि)
6. अनुभववीथि (चतुर्थ वीथि)
7. अनुभववीथि (पंचम वीथि)
8. अनुभववीथि (पंचम वीथि)
9. अनुभववीथि (षष्ठ वीथि)
10. अनुभववीथि (अष्टम वीथि)
11. अनुभववीथि (चतुर्थ वीथि)
12. अनुभववीथि (प्रथम वीथि)
13. अनुभववीथि (प्रथम वीथि)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अनुभववीथिः – त्रिपाठी, राधावल्लभ, संस्कृत भारती, नई दिल्ली–110055, 2013